मध्य. भार. आर्य भाषाएँ

▪व्याकरणिक नियमों के कारण संस्कृत जन-सामान्य से दूर अपभ्रष्ट रूप में प्रचलित और संस्कृत शिक्षित समुदाय की भाषा रही।

▪सर्वप्रथम गौतम बुद्ध ने लोकवाणी को राष्ट्रवाणी का रूप देकर बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करने में सफलता प्राप्त की। परिवर्तित भाषा का नया रूप कालक्रमानुसार तीन रूपों में प्राप्त हुआ

1.पालि(600ई.पू.से प्रथम शती तक)

2.प्राकृत(प्रथम शती से छठीं शती तक)

3.अपभ्रंश(छठी शती से दसवीं शती तक)

पालिः-पालयति रक्षतीति पालि अर्थात् जिस भाषा से बुद्ध के वचनों की रक्षा हुई है वह पाली है।

पालिः-पालयति रक्षतीति पालि अर्थात् जिस भाषा से बुद्ध के वचनों की रक्षा हुई है वह पाली है।

- पाटलिपुत्र मुख्य क्षेत्र और मागधी से विकास
- सर्वप्रथम गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए
- लिखित रूप अशोक के शिलालेखों में गिरनारका शिलालेख पालि से निकट
- बौद्ध धर्म की भाषा होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय महत्व
- चीन,जापान औरलंका तक व्याप्त।आज भी यहाँउसका स्वरूप सुरक्षित
- त्रिपिटक कथाएँ,अट्ठ-कथा जैसे बौद्ध धर्म के बुद्ध के ग्रंथ इसी भाषा में
- प्रवृत्तिगत सरल भाषा
- श,ष,स में केवल स का प्रयोग
- स्वरों की संख्या कम हो गई।
- व्यंजनान्त पद स्वरान्त हो गए यथा भगवान का भगवा।
- नाम तथा धातु में द्विवचन समाप्त
- दंत्य ध्वनियाँ का मूर्धन्यीकरण हो गया।

प्राकृत:- म.भा आ,भाषा का दूसरा चरण

- महावीर जैन के उपदेशों के साथ ज्ञान और उपदेश की भाषा बनी।
- प्राकृत का अर्थ होता है सामान्य जन की भाष
- अत्यन्य ललित और मधुर भाषा
- साहित्य समृद्ध और शृंगार की दृष्टि से विशिष महत्व
- सेतु-बंध, गौडवहो,गाहा सत्तसई,बज्जालग्ग प्रमुख रचनाएँ।
- कालिदास के नाटकों में निम्न वर्गीय पात्रों की भाषा प्राकृत
- पैशाची,अर्धमागधी,मागधी,शौरसेनी और महाराष्ट्री प्रमुख भेद
- सिन्ध,बलुचिस्तानऔर कश्मीर की भाषा पैशाची
- कल्हण की राजतरंगिणी पैशाची की रचना
- मगध और उसके पूर्व की भाषा मागधी
- बिहारी, बँगला,उड़िया तथा असमी का विकास मागधी से।
- अवध और काशी जनपदों की भाषा अर्ध मागधी से।
- अर्ध मागधी का झुकाव शौरसेनी की ओर अधिक

- दंत्य ध्वनियाँ का मूर्धन्यीकरण हो गया।
- अनेक साहितिक ग्रंथ लिखे गए।
- शौरसेनी कुरु और पंचाल जनपद की भाषा
- पश्चिमी हिंदी की बोलियों का विकास इसी से।
- श,ष,स में केवल स का प्रयोग
- महाराष्ट्रीः-प्राकृत का अधिकांश साहित्य महाराष्ट्री में
- हार्नल ने महाराष्ट्री का मतलब किसी क्षेत्र विशेष नहीं अपितु महान राष्ट्र से माना
- प्राकृत की सारी विशेषताएँ महाराष्ट्री में पायी जाती है।
- **अपभ्रंशः-** अपभ्रंश का अर्थ होता है बिगड़ा हुआ।
- 500ई. से 1000ई.तक
- अपभ्रंश को अवहट्ठ,ग्रामीण देसी,आभीरी,आभीरोक्ति भी कहा जाता
- डॉ.हरदेव बाहरी ने अपभ्रंश को आभीरों की भाषा कहा।
- डॉ.भोलानाथ तिवारी ने प्राकृत के आधार पर शौरसेनी,महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी,केकय,और ब्राचड-छः अपभ्रंशों का स्वीकार

- वैदिक से प्राकृत तक भाषाएँ संयोगात्मक थीं परन्तु अपभ्रंश वियोगावस्था ओर बढ़ी और आ.भा.आर्य भाषा तक यह नियम चल रहा है।
- लिग,वचन,कारक विभक्तियाँ कम हो गयीं। नपुंसक लिंग समाप्त हो गया।कारकों के संस्कृत चौबीस रूप केवल छः रह गए।वचन दो।

अपभ्रंश में तद्भव और देशज शब्दों की संख्या बढ़ गयी।